औषधिय युक्त घास प्रजातियाँ

लेमन घास
ऊँचाई – 100–1200 मी०
उपयोग –औषधिय एंव एंटीआक्सीडेंट जीवाणुरोधी

Cymbopogon citratus

जावा घास
ऊँचाई – 800–1500 मी०
उपयोग –आयुर्वेदिक, गठियावात, कास्मेंटिक्स ।

Cymbopogon winterianus

रोशा घास
ऊँचाई – 500–2500 मी०
उपयोग –आयुर्वेदिक पौधा, जोड़ों के दर्द, त्वचा रोग, अस्थमा, एनोरेक्सिया।

Cymbopogon martini

मोथा घास
ऊँचाई – 2100–4500 मी०
उपयोग –बुखार, चर्म रोग, पेचिश, जलन।

Cyperus rotundus

खस घास
ऊँचाई – 700–1200 मी०
उपयोग –इत्र, कॉस्मेक्सि, ठण्डक पेय पदार्थ, कमर दर्द, मोच, जल संरक्षण में।

Vetiver zizanoides

औषधिय युक्त घास प्रजातियाँ

लेमन कृष्णा
ऊँचाई – 100–1200 मी०
उपयोग –औषधिय एंव एंटीआक्सीडेंट जीवाणुरोधी

Cymbopogon flexuous

दूधी घास
ऊँचाई –1700– 3000 मी०
उपयोग –अस्थमा, खूनी आंव, श्वास नलिका की सूजन में।

Euphorbia hirta

दूब घास
ऊँचाई – 625–2400 मी०
उपयोग –यूरेनाइजल डिस्आडर, पौष्टिक चारा।

Cynodon dactylon

गोड़िया घास
ऊँचाई – 700–1800 मी०
उपयोग – मृदा संरक्षण, चटाई बनाने में, जड़े औषधिय रूप में।

Chrysopogon fulvus

कुश घास
ऊँचाई – 1700–2500 मी०
उपयोग – डिसेन्ट्री, मृदा संरक्षण में, पल्प कागज बनाने में उपयोगी।

Desmostachya binnata

घास प्रजातियाँ

द्वारसों पौधालय वन अनुसंधान केन्द्र कालिका, रानीखेत

उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान
वन विभाग , नैनीताल

घास प्रजाति के बारे में

घास पुष्पी पादप जगत का एकबीज पत्रीय कुल है। उत्तराखण्ड में लगभग 185 घास प्रजातियां पाई जाती है। अतः प्रजातियों की संख्या के आधार पर हमारा देश प्रमुख स्थान पर है। परंतु वर्तमान समय में देश की बढ़ती जनसख्या एवं चारे की अल्प मात्रा में उपल्बधता को देखते हुए घास की उत्तम व पौष्टिक प्रजातियों का विस्तार किया जाना आवश्यक हो गया है। घास एक महत्वपूर्ण पौधा है, जो समुद्र तल के मैदानी क्षेत्रों से हिमालय के उच्च पर्वतीय क्षेत्र तक पाया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है की पारिस्थितिकी दृष्टि से भी घासों का होना महत्वपूर्ण है। उत्तराखण्ड शीतोष्ण एवं समशीतोष्ण क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस क्षेत्र में निम्नलिखित प्रजातियों को द्वारसों पौधालय, रानीखेत में संग्रहीत कर उत्तम व पौष्टिक प्रजातियों का विस्तार किया जा रहा हैं, जिसमें द्वारसों पौधालय में 30 घासों का संग्रह किया गया हैं , जो विस्तारित किया जा रहा हैं। यह पारिस्थितिकी संतुलन व दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में एक रोजगारपरक एवं महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्य चारा घास प्रजातियाँ

Lolium perenne

राई घास
ऊँचाई – 2100–4500 मी०
उपयोग – मृदा संरक्षण, चारा घास।

Bromus inermis

ब्रोम घास
ऊँचाई – 1500–3900 मी०
उपयोग – दूधारू जानवरों के दूध वृद्धि हेतु उपयोगी।

Setaria sphacelata

सीता घास
ऊँचाई – 800–1650 मी०
उपयोग – मृदा संरक्षण एवं अच्छे चारा का स्त्रोत।

Dactylis glomerata

गुच्छी घास
ऊँचाई – 2100–3000 मी०
उपयोग – मृदा संरक्षण एंव अच्छे चारे का स्त्रोत।

Agrostis stolonifera

बबिला घास
ऊँचाई – 1200–2135 मी०
उपयोग –चारा घास, पानी की गुणवत्ता में सुधार हेतु उपयोगी।

मुख्य चारा घास प्रजातियाँ

Saccharum spontenum

कांस घास
ऊँचाई – 0–1700 मी०
उपयोग – बालू कटान, छप्पर बनाने हेतु उपयोगी।

Thysanoleana maxima

औंस घास
ऊँचाई – 2000 मी०
उपयोग – मृदा संरक्षण, सजावटी पौध तथा झाड़ू बनाने में।

Festuca arundinacea

दोलनी घास
ऊँचाई – 1250–2500 मी०
उपयोग – मृदा संरक्षण एवं पौष्टिक चारा हेतु उपयोगी।

Heteropogon contortus

कुमेंरिया घास
ऊँचाई – 600–2000 मी०
उपयोग – मृदा संरक्षण एंव सुपाच्य, पौष्टिक चारा।

Arundinella neplensis

नलिका घास
ऊँचाई – 500–2500 मी०
उपयोग – बालू कटान, छप्पर बनाने हेतु उपयोगी।